मधुबन ओम् शान्ति अंक 264 जुलाई 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(12-06-14)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपनी शुभ श्रेष्ठ वृत्तियों द्वारा शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले, हर संकल्प, बोल और कर्म में अलौकिकता को धारण कर साधारणता को समाप्त करने वाले, निमित्त बेहद सेवाधारी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सबका रूहानी स्नेह, शक्तिशाली याद की सकाश मिलती रहती है। अभी मैं बाबा के बेहद घर शान्तिवन में हूँ। बाबा ने ऐसे सुन्दर बेहद स्थान पर बिठाया है जो सारे कल्प में नहीं मिलेगा। मैं तो अपने भाग्य को देख-देख भाग्य विधाता बाबा के गुण गाती रहती हूँ। बाबा के अनेकानेक बच्चे यहाँ आते, मिलते बहुत अच्छे वायब्रेशन लेकर जाते हैं। मैं बाबा से पूछती हूँ, बाबा आपने मुझे इस शरीर में क्यों बिठाया है! तो जवाब आता बच्ची जो बाप से प्यार और पालना ली है, वह सबको देनी है।

अभी दो बार मुख्य बहिनों से मिलते बहुत अच्छी गहरी रूहरिहान हुई। बाबा कहते बच्ची जो करना है अब कर ले, कल किसने देखा! कल इस शरीर में हूंगी या नहीं, पर इतना जरूर है अन्त मते सो गते अच्छी हो। मेरे से हर एक को बाबा दिखाई पड़े। वृत्ति और स्मृति से सेवा करते, वृत्ति सदा बेहद में रहे। अपना टाइम सफल करना और औरों का टाइम सफल कराना, यह कितना ऊंचा काम है। इसमें कोई शो नहीं है। बाबा कैसे यज्ञ की सेवा कर करा रहा है, अनुभव कर रहे हैं। बाबा ने जिस भावना से यज्ञ रचा है, स्वाहा किया है, उस बाबा की भावना ने कई आत्माओं के द्वारा सेवा कराई है। वही हम सबको करनी है।

मेरे ध्यान पर सदा दो तीन बातें रहती हैं। एक तो हम अपने आपकों देखें और कोई भी बात दिखाई न दे। कोई की कमी कमजोरी मुझे देखनी वा सुननी नहीं है। स्वचिंतन में रहने का जो टेस्ट है उसका जिसे पता है वह दूसरी बातों में नहीं जाते। हमें सदा अच्छे वायब्रेशन में रहना है, अच्छे वायब्रेशन खींच लेना है। यही है मित्रता भाव और कोई भाव न हो। न किसी के प्रभाव में आयें, न किसी के प्रति नफरत का भाव हो। सब अच्छे हैं, सब अच्छे से अच्छा होना है। संगठन में दो शक्तियां बहुत रॉयल बनाती हैं - एक समेटने की शक्ति, दूसरा समाने की शक्ति, कुछ भी हो समेट लो और समा लो जैसे कुछ हुआ ही नहीं। कभी जिद्द वा सिद्ध करने की बात ही नहीं है। सच्चाई प्रेम की जो भावना है वह आपेही पहुंचेगी, इसमें जरा भी उतावली नहीं चाहिए। यह महापरिवर्तन का समय है, सबको बदलना ही है। हमारी शुभ भावनायें कम न हो। अब हमारे सामने कोई भी बैरियर, ब्लॉकेज अथवा बॉण्डेज न रहे तो विश्व परिवर्तन का यह बड़े से बड़ा कार्य सम्पन्न हो जाये।

बाकी, यह जून का मास तो मीठी मम्मा का मास है, मम्मा का यह महामन्त्र सदा याद रहता है कि हुक्मी हुक्म चला रहा है, हर घड़ी अन्तिम घड़ी है, इसलिए अलबेला नहीं बनना है। जैसे मम्मा गम्भीरता की मूर्ति, सदा एकव्रता होकर रही। ऐसे मीठी माँ और अपने प्यारे-प्यारे बापदादा को फालो करते उनके समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। अच्छा - सभी को विशेष मीठी जगदम्बा माँ की स्मृति के साथ बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,
बी. के. जानकी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ये अव्यक्त इशारे

यज्ञ स्नेही सहयोगी के साथ यज्ञ रक्षक बनो

1) बाप ने आते ही पहले-पहले यज्ञ रचा। यज्ञ को सदा आगे बढ़ाना, भरपूर रखना, यही यज्ञ स्नेही बच्चों का काम है। जैसे सेन्टर का चारों ओर से ध्यान रखते हो, ऐसे ही बेहद यज्ञ का ध्यान रखना हर एक बच्चे का कर्तव्य है। हर एक अपने सेन्टर पर रहते भी यज्ञ रक्षक बनकर रहो, हर ब्राह्मण बच्चे का यज्ञ प्यारा है, तो अपने को ऐसा जिम्मेवार समझकर सदा चलना।

2) ब्राह्मण माना यज्ञ रक्षक। पहले यज्ञ फिर सेन्टर। यह यज्ञ स्थान सभी आत्माओं को यज्ञ प्रसाद देने वाला है। तो जैसे बाप-दादा यज्ञ रक्षक है, ऐसे आप बच्चे भी बापदादा के साथी हो। जैसे चार सबजेक्ट हैं – ज्ञान, योग, धारणा, सेवा। ऐसे तन, मन, धन और समय यह भी चार सबजेक्ट हैं, यज्ञ रक्षक बच्चे इन चारों से सहयोगी बनते हैं।

3) हरेक को अपने आप से पूछना चाहिए कि जितनी बुद्धि, जितना तन-मन-धन और समय लौकिक जिम्मेवारियों में देते हैं उतना ही यज्ञ तरफ देते हैं? अगर ज्यादा नहीं तो इसका वज़न एक जैसा होना चाहिए। अगर दोनों तरफ का एक जितना है तो भी नजदीक गिना जायेगा।

4) इस अविनाशी ज्ञान यज्ञ को कुण्ड कहा जाता है तो इस कुण्ड को भरना है। इसमें सब कुछ स्वाहा कर देना है। वह यज्ञ तो 10-12 दिन किया फिर जैसे का वैसा हो जाता है। यह तो अविनाशी यज्ञ है। शिवबाबा का भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर। लेकिन काल कंटक दूर तब होंगे जब नई दुनिया में जायेंगे। यहाँ सब ठीक ही चलता रहेगा सिर्फ बच्चों की बुद्धि चुस्त, दूरांदेशी होनी चाहिए।

5) जो भी सेवा स्थान है सभी यज्ञ ही हैं लेकिन फिर भी यज्ञ कुण्ड का महत्व होता है। वैसे भी देखा होगा गंगा और यमुना दोनों का महत्व है लेकिन फिर भी संगम का महत्व ज्यादा है। वहाँ नहाना श्रेष्ठ माना जाता है। जैसे विशेष स्थानों का विशेष महत्व होता है, ऐसे मधुबन यज्ञ का विशेष महत्व है, इसे भरपूर रखना यज्ञ रक्षक बच्चों का फर्ज है। हर एक को ऐसा सैम्पल बनना है जो उन्हें देख दूसरे भी आकर्षित होकर यज्ञ कुण्ड में स्वाहा हो जायें।

6) जो यज्ञ स्नेही सहयोगी हैं वह परिवार और बापदादा के विचारों और जो कर्म होते हैं उनमें एक दो के समीप होंगे। एक दो की मत के भी समीप आते जायेंगे, उनमें मतभेद नहीं होगा। जैसे यादगार के यज्ञ में आहुति सफल तब होती है जब मन्त्र जपते हैं। यहाँ भी सदा मन्मनाभव मन्त्र स्मृति में रहे तब आहुति सफल हो। तो मन्त्र स्वरूप में स्थित होने वाले बनो सिर्फ मंत्र बोलने वाले नहीं।

7) कोई भी यज्ञ रचा जाता है तो वह सफल तब होता है जब सम्पूर्ण आहुति डाली जाती है। जरा भी आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। जितना और उतना का हिसाब है। हिसाब करने में धर्मराज भी है। उनसे कोई भी हिसाब रह नहीं सकता इसलिए जो भी कुछ आहुति में देना है वह सम्पूर्ण देना है और फिर सम्पूर्ण लेना है।

8) हरेक को अपनी सर्विस होते हुए भी यज्ञ की ज़िम्मेवारी अपने सेन्टर की ज़िम्मेवारी समान ही समझना हैं। खुद आफ़र करना है। वाणी के साथ-साथ वृत्ति और दृष्टि में इतनी ताकत हो जो किसके संस्कारों को बहुत कम समय में बदल दो। मुख्य सर्विस यह है।

9) जो स्वयं की संभाल करते हैं वह यज्ञ की भी संभाल करते हैं। जैसे रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। वैसे यज्ञ के मददगार बनना ही मदद लेना है। देते हैं लेने के लिए। एक बार देना अनेक बार लेने के हकदार बन जाते हैं।

10) जैसे आप लोग शुरू में जब सर्विस पर निकले तो नॉलेज की शक्ति तो कम थी लेकिन सफलता त्याग और स्नेह के आधार पर हुई। बुद्धि की लगन दिन-रात बाबा और यज्ञ के तरफ थी। जिगर से निकलता था बाबा और यज्ञ। इसी स्नेह ने ही सभी को सहयोग में लाया। इसी स्नेह की शक्ति से ही केन्द्र बने तो आदि स्थापना में जिस शक्ति ने सहयोग दिया, अन्त में भी वही होना है।

11) यज्ञ पिता द्वारा ही यज्ञ की रचना हुई है, तो यज्ञ कारोबार अक्षर कहने से बाप की याद आती है। कभी भी कोई कारोबार करते हो तो समझो ईश्वरीय सर्विस पर हूँ वा यज्ञ कारोबार पर हूँ। इस स्मृति में रहने से यज्ञ रचयिता की स्मृति स्वत: आयेगी। कोई भी कार्य करते हुए स्मृति रहे कि इस कार्य के निमित्त बनाने वाला बैकबोन कौन है!

12) मधुबन यज्ञ भूमि है, जैसे यज्ञ में अग्नि होती है। उस अग्नि में कोई भी चीज़ पड़ने से बहुत जल्दी मोल्ड हो जाती है। जैसा स्वरूप बनाना चाहो वैसा बना सकते हो। तो यहाँ यज्ञ में आये हो तो अपने आप को जैसे बनाने चाहो वैसा सहज ही बना सकते हो।

13) सम्पूर्ण कमजोरियों की आहुति डालने के लिए मधुबन महा-यज्ञ में आते हो। तो यज्ञ में सब आहुति डाल दी वा अभी रह गई है? आहुति डालने के बाद अन्त में कहते हैं स्वाहा। जो स्वाहा हो चुके वह बीती हुई बातों को स्वप्न में भी नहीं देख सकते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14) यज्ञ की हर वस्तु स्थूल धन के समान है। जो यज्ञ की हर वस्तु की सम्भाल करते हैं वे धन से भी सहयोगी बन जाते हैं। अगर यज्ञ की कोई भी वस्तु व्यर्थ गंवाते हैं तो भी कम खर्च बाला-नशीन नहीं कहेंगे इसलिए यज्ञ की स्थूल वस्तु कम खर्च बाला-नशीन बनकर अपने प्रति वा दूसरों के प्रति यूज करो। यज्ञ की सेवा, यज्ञ के वस्तु की एकॉनामी रुपी धन स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है।

15) जैसे कोई यज्ञ रचते हैं तो बीच-बीच में आहुति डालते रहते हैं लेकिन अन्त में सभी मिलकर सम्पूर्ण आहुति डालते हैं। ऐसे जब सभी मिल करके सम्पुर्ण आहूति डालेंगे तब सारे विश्व के वायुमण्डल वा सर्व आत्माओं की वृत्तियां वा वायबेशन परिवर्तन होंगे। आप सबने जो विश्व परिवर्तन वा विश्व नव निर्माण की जिम्मेवारी ली है उसे पूरा करने के लिए वा अपने कार्य को सम्पन्न करने के लिए सम्पूर्ण आहुति डालनी है।

16) इस अश्वमेध यज्ञ में मैं-पन के अश्व को स्वाहा करना, यही अन्तिम आहुति है और इसी के आधार पर ही अन्तिम विजय के नगाड़े बजेंगे। संगठन रूप में इस अन्तिम आहुति का दिल से आवाज फैलाओ फिर यह पांचों तत्व सदा सब प्रकार की सफलताओं की माला पहनायेंगे। अब तक तो तत्व भी सेवा में कहीं-कहीं विघ्न रूप बनते हैं लेकिन स्वाहा की आहुति देने से आरती उतारेंगे, खुशी के बाजे बजायेंगे। सब आत्मायें अपनी बहुतकाल की इच्छाओं की प्राप्ति करते हुए महिमा के घुंघरू पहन नाचेंगी।

शिवबाबा याद है ? 25-2-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"बाबा का प्यार लेना है तो नियम मर्यादाओं का कदम रखो, सम्पूर्ण त्यागी बनो, पढ़ाई पर पूरा ध्यान दो"

(दादी जानकी)

बाबा ने जो दिया है उसका हम लोगों ने लाइफ में फायदा लिया है। हमारे पास कहाँ से आया? क्या है, कोई भी बात ठीक न हो ना, वो ठीक होना जरुरी है। एक घड़ी (समय) को देखते हैं, दूसरा बाबा को देखते हैं तो क्या देखते हैं? बाबा को देखते हैं, कैसे देखते हैं? एक सेकेण्ड... वन्डरफुल है मेरा बाबा।

पहले अपने को आत्मा समझकर बाबा को याद करुँ, यह सहज है या बाबा को याद करने से अपने को आत्मा समझना सहज है? समझो मैं कहूँ मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ। तो आधाकल्प से देह-अभिमान में रहने की आदत है, अभी कितने सालों से ज्ञान में हैं तो भी देह-अभिमान खत्म नहीं हुआ है। तो अभी दिखाई पड़ता है, बाबा को अच्छी तरह से याद करो तो आत्मा में जो अभिमान भरा हुआ है वो खलास हो जाए। पर मैं आत्मा हूँ, बाबा को याद करूँ, आत्मा फिर घड़ी-घड़ी कोई-न-कोई संकल्प में इधर उधर देखने में चली जाती है। मैं आत्मा हूँ, यह नेचुरल हो गया है, देही-अभिमानी स्थिति में जरा भी कोई पुराना संस्कार है, स्वभाव है, बाबा की याद नहीं होगी। आजकल अव्यक्त मुरलियों के द्वारा भी आइना मिलता है अपनी स्थिति को देखने के लिए। बाबा ने एक बात बहुत गहरी सुनाई है कि जब तक त्याग वृत्ति नहीं है तो बाबा याद नहीं आयेगा। अन्दर से त्याग, वो त्याग वृत्ति तब ही होगी जब बाबा से जो मिला है, जो प्राप्ति हुई है वो बहुत ऊंची है, उसकी भेंट में सब तुच्छ है। कुछ भी प्राप्ति है वो सब तुच्छ है। सेवा में जो मान मिला, शान मिला उसमें जो खुश होता है या अपमान की फीलिंग आती है माना बाबा से जो प्राप्ति है ना, उसकी वैल्यु नहीं है। बाबा से जो भी प्राप्तियाँ हुई हैं वो सारी इमर्ज करो... एक है बाबा की पालना, ऐसी पालना मिली है जो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। इस शरीर में आत्मा को इमर्ज करो, मरजीवा लाइफ में भले तबियत कुछ भी हो जाये तो भी बाबा सम्भालता है, यह अनुभव है। मैं शरीर में आत्मा हूँ, यह शरीर मेरे बाबा की अमानत है, उसको अच्छी तरह से सम्भालना है। यह शरीर मेरा नहीं है, प्रैक्टिकल लाइफ में इन बातों को अन्दर ही अन्दर जीवन में लाने से जीवन यात्रा बड़ी अच्छी होती है। लम्बे हैं रास्ते, आओ चले हम हंसते गाते...।

पढ़ाई से बड़ा प्यार है क्योंकि बाबा के घर का खाते हैं, बाबा हमेशा कहता था लौकिक में भी बच्चा अच्छा पढ़ता है तो माँ बाप खुश होते हैं। अगर नहीं पढ़ता है तो उनको फिकर होता है, इनका भविष्य क्या होगा। हम तो सदा ही मुरली सुनने के लिए बाबा के सामने बैठी होंगी, टाइम पर आयेंगे। बाबा आवे उसके बाद नहीं, बाबा पीछे आयेगा पहले हम बैठेंगे। तो यह जो नियम मर्यादायें है, आदि से चलने वाले उनको बहुत कदर होता है, बाबा को भी ऐसे बच्चों के लिए प्यार बहुत है। तो मेरी यह भावना है जो प्यार मुझे मिला है वो सबको मिले। आप बाबा के इतने अच्छे बच्चे बनो, त्यागी में भी सम्पूर्ण त्यागी, कोई इच्छा न हो।

तो जब बाबा को अच्छी तरह से देखते हैं तो आत्मा में अहंकार तो मरा, अभिमान भी गया, देह से न्यारे रहने की, अशरीरी बनने की वो ऐसी प्रैक्टिस हो, तो गैरंटी है अन्त मते सो यही गति होगी। बाबा के मुरलियों में आता है अभी जो पुरुषार्थ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

करेंगे तो अन्त मते सो गति वही होगी। अभी पुरुषार्थ में थोड़ी कमी होगी तो अन्त मते वही होगा। एक अन्तिम जन्म है, दूसरा अन्तिम घड़ी है, अन्तकाल कौन याद आता है, यह प्रैक्टिकल में ज्ञानी आत्माओं को देखा है, किसी में भी अटैचमेंट होगी तो मरने समय वही याद आयेगा। एक आत्मा बड़ी अच्छी थी पर खाने-पीने का बहुत शौक था, उसको खाना अच्छा मिला तो खायेगी, नहीं तो छोड़ देगी। बड़ी थी समझदार थी, पर मैंने आँखों से देखा, अन्त मते उसका उसी में हुआ। तो समझदार वह जो अन्त मते का ख्याल रखे। ड्रामा बताता है यह कर, बाबा हमेशा कहता है समय का कदर करो, पर कईयों को टाइम का बिल्कुल कदर नहीं है। अच्छा है मेरे पास मोबाइल भी नहीं है, फलाना भी नहीं है... सबको देखती हूँ, हरेक के हाथ में कुछ-न-कुछ ऐसी चीज़ें हैं। यहाँ बैठे भी यही करते रहेंगे, तो यह क्या है? छोड़ो तो छूटे। समझते हैं इसके बिगर चल नहीं सकते हैं, बहुत जरुरी है, पर अन्त मते वही हाथ में होगा तो क्या गति होगी? कोई बुलायेगा या मुझे किसी को बुलाने का ख्याल आयेगा, न सिर्फ अन्त मते हमारे लिये है अगर हमारी अन्त मति अच्छी होगी तो कई आत्माओं की हो जायेगी।

अटेन्शन रखने से सबके लिये अन्दर में बहुत प्यार रहता है, किसके लिये भी ऐसी निगाह नहीं है, सब अच्छे हैं क्योंकि हमको बाबा वह बना रहा है, जो आत्मायें सब शान्तिधाम में जायेंगी, भले सतयुग में न आवें परन्तु वो भी ऐसा बाबा को याद करके जावें। समय आया भगवान अपने घर लेके जा रहा है। इतनी बात हर आत्मा के अन्दर आ जावे। बाबा ने कहा है सब आत्मायें ऊपर से नीचे आ जायेंगी तभी सब ऊपर जायेंगे। कारणे अकारणे कहाँ कैसा, कहाँ कैसा विनाश होगा तब जायेंगे, विनाश के पहले नहीं जा सकते हैं। बाबा ने शुरू में ही हमको बताया है, विनाश होने वाला है, दुनिया वाले नहीं मानते थे पर मैं बताती हूँ कोई कोई बी.के. बनके भी चले गये क्योंकि विनाश तो आया ही नहीं। हम बच्चों का ख्याल नहीं करेंगे क्या? कुछ कमायेंगे नहीं तो कैसे चलेंगे? क्या बाबा ही चलायेगा क्या? बाबा कैसे चलायेगा... ऐसा संशय आया तो चले गये। तो यह निश्चय चाहिए, निश्चय ने ही यहाँ तक पहुँचाया है। तो हर एक अपनी बुद्धि को देखे, निश्चयबुद्धि विजयंती। ऐसे बाबा को जो पहचानता है वो महान भाग्यशाली तो क्या पदमापदम भाग्यशाली है। जिसने यह समझा है, जो बाबा को पहचानता है वो हाथ उठाओ। बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, उस दिव्य बुद्धि द्वारा परमात्मा को जानते हैं, उसको मैंने देखा है अच्छी तरह से, वो माता है पिता है, शिक्षक है सखा है, वो मेरा है यह अनुभव कर रहे हैं। तो बाबा ने भी इतना प्यार दे करके अपना साथी बनाया। कहाँ परमात्मा परमधाम में रहने वाला ऊंचे तो ऊंचा भगवन्, वो मेरा कम्पैनियन है। तो आप सब भी यह अनुभव करो।

बाबा को पहचानने से क्या फायदे हुए, एक दो को जानने से क्या फायदे हुए और खुद को जानने से क्या फायदे हुए, वो देखना चाहिए। कई हैं खुद को नहीं पहचानते हैं, अभी भी साक्षी हो करके बताओ खुद को कौन पहचानता है वो हाथ उठाओ। खुद को पहचानें तो खुदा दोस्त का अनुभव होगा। खुदा को दोस्त बनाने से करनी ऐसी हो जाती है जो राजाओं का राजा बन जाते हैं। ऐसा स्वमान में रहकर, यह सुती घोटके विचार सागर मंथन करके ऐसी स्थिति बनाओ। मैं बाबा को हमेशा कहती हूँ मेरा शरीर ऐसा है, मैं कुछ पुरुषार्थ, सेवा नहीं कर सकती हूँ, तो बाबा ने जो शब्द बोले बच्ची तेरा भाग्य भगवान के हाथों में है। तो मेरा सुनकर भी आप निश्चय करो ना, तो निश्चय में बहुत बल मिलता है। जो बाबा करायेगा वो करेंगे। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"दो बातें ब्राह्मण जीवन में बहुत खतरनाक हैं - पहला किसी पर प्रभावित होना, दूसरा किसी से घृणा रखना, इनसे बचने वाला ही सच्चा योगी है (दादी जानकी)

ओम् शान्ति भवन क्या है? एयरपोर्ट। यहाँ बैठे सब बातें समेटके, समाके शान्तिधाम में चल रहे हैं। मधुबन में यह भासना आती है ना। साकार में मीठे मीठे बाबा ने हिस्ट्री हॉल में बैठ बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाई हैं। फिर मेडिटेशन हॉल में अव्यक्त बापदादा की पधरामणी होते ही बाबा के डबल विदेशी बच्चे पैदा हुए। वैराइटी बाबा के बच्चों को देख जैसे अर्जुन कहता है मैंने अभी आपको पहचाना, आपके विराट स्वरूप को। साकार में तो क्या बताऊं, पर अव्यक्त हो करके हम सबकी अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए कितना प्यार से पालना कर पढ़ाई पढ़ा रहे हैं।

जैसे निर्मलशान्ता दादी हमेशा मुझे कहती थी जनकराज! दादी गुल्जार को कहती थी गुल-गुलाबी! और कोई ऐसे नहीं कहता। तीनों ही बाप की बेटी परदादी, तीनों ही बाप लौकिक, अलौकिक, पारलौकिक एक में ही हैं। मुझे भी नशा है एक में ही तीन हैं, कभी लौकिक का भान नहीं आया क्योंकि परदादी और हम एक ही स्कूल में पढ़ती थी, दोनों एक ही बैंच पर बैठते थे। तो सब लड़कियों से न्यारे लगते थे, हम दोनों लड़कियाँ ऑर्डनरी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ढंग से नहीं रहती थी। इकट्ठे पढ़े हैं, इकट्ठे रहे हैं। बाबा ने भी साकार में मुझे निर्मलशान्ता दादी से ज्यादा प्यार किया है। उस प्यार ने इतना हरा भरा, मोटा ताजा बनाके रखा है। मैं आत्मा अब इस शरीर में क्यों हूँ? दादी गुल्जार से रोज़ की मुलाकात में यह बात पूछती हूँ। हमारी बहुत अच्छी रूहरिहान होती है। तो अपनी दिल को साफ सच्चा रखना, यह हमारी परदादी की खूबी रही।

आज के ड्रामा में यह जो सीन है हमारी बहुत पुरानी पुरानी कुंज बहन, कुमारका दादी के बहन की लड़की थी कुंज दादी। नाम कुछ और था बाबा ने कहा है जैसे बुल-बुल टिकलू टिकलू अच्छी करती है, ऐसे कुंज जब बोलती थी तो बड़ा अच्छा बोलती थी। जगदीश भाई ने जब कोर्स किया, मुझे लगता था यह बहुत माथा खपाता है, क्योंकि पढ़ा लिखा बहुत था, तो ज्ञान ऐसे जल्दी नहीं कैच करता था। तो मैंने कुंज से कहा तुम इससे माथा मारो, तो कुंज ने बैठ करके जगदीश भाई को कोर्स कराया। मैं कहती थी मेरे से बात नहीं करो, शान्त रहो। तो जगदीश भाई मेरे से डरता था क्योंकि यह कहेगी शान्त करो। मैं कहती थी तुम इतना नहीं समझता है मुझे यह पढ़ाई कौन पढ़ाता है? तो बिचारा हमारे से डर जाता था। तो कुंज से क्वेश्चन आन्सर करता था। तो कुंज पंजाब में, अमृतसर में मेरे साथ रही है, बहुत अच्छी वन्डरफुल सेवायें की हैं।

आज हमारे विश्वरतन दादा का भी दिन है। तो आज के दिन ऐसी स्थिति बनाओ सब अच्छे हैं, हाथ ऐसा हो क्योंकि मैं ऐसी स्थिति बनाऊं जो दुआयें दूँ दुआयें लूँ, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करें? मैंने कहा दुआयें देना बहुत बड़ी बात है पर दुआयें लेने के लिए ऐसी हमारी धारणा हो, प्रैक्टिकल प्रमाण हो जो सबकी दिल से निमित्त मेरे प्रति दुआयें निकलें क्योंकि योग लगाते हैं बाबा से, वही हमारी दवाई है, कुछ भी हो जाये। अभी हम कुंज दादी के लिए, निर्मलशान्ता दादी के लिए योग में बैठे थे। उन्होंने तो योग कमाया ही है परन्तु उनसे भी प्रेरणा लेने के लिए अभी हम याद में बैठे थे। यह हमारा फर्ज है, साइलेंस में रहना।

साइलेंस माना कोई चिंतन नहीं, ऐसी स्थिति सदा रहे। बाबा के ही चिंतन में रहूँ, कोई बात मन चित में न हो, जो बाबा मेरे चिंतन में न रहे क्योंकि कोई भी बात मन चित्त में होगी, मन में पहले होती है, चित्त में अन्दर होती है। मन में मोटे रूप में होती है, चित्त में पुरानी बात होती है। वो निकल आती है तो चेहरे पर भी आ जाती है, शब्दों पर भी आ जाती है। बड़ा सम्भालना है। साक्षी और साथी बन पार्ट प्ले करो। बाबा ने यह भी कहा जो भी बाबा के बच्चे हैं, बाबा को अच्छे लगते हैं क्योंकि कहता है मेरे तो बच्चे बन गये ना इसलिए बाबा यह कभी नहीं कहता है कि यह अच्छा नहीं है, पर बनो कैसा वो स्पष्ट सुनाता है। उसमें भी दो बातें बहुत खतरनाक हैं, जब मेरा बाबा कहा तो भूल से भी कोई देहधारी से लगाव न हो। किसी से प्रभावित हुआ या किसी के लिए घृणा रखी तो बाबा याद नहीं आयेगा। हिम्मते बच्चे मददे बाप वाला जो सौदा है वो कैन्सिल हो गया। यह बड़ी भूल है, जिसको बाबा कहते किसके साथ फैमिलीयरिटी में बातचीत करना या किनारा करना। इसका बहुत ध्यान रखो क्योंकि बाबा चाहता है मेरे सारे बच्चे राज्य पद पायें इसलिए राजयोग सिखाता हूँ, राजाओं का राजा बनाता हूँ।

आजकल राजाओं के पास कुछ रहा ही नहीं, कांग्रेसी राज्य ने राजाओं को खत्म कर दिया। द्वापर के शुरुआत में जो राजायें थे वो दान-पुण्य करते, मन्दिर बनाते, एक जन्म में भी राजाई ली थी पर बाबा हमको 21 जन्मों के लिए राजाई दे रहे हैं। मैं तो कहती 84 जन्म ही हम राजाई संस्कार में रही हूँ माना मन कर्मेन्द्रियों के इच्छा वश नहीं रही होंगी, अन्तिम जन्म में भी नहीं रही होंगी। इस अन्तिम जन्म में बाबा का बनने के पहले बचपन से ले करके सारी स्टोरी को इमर्ज करती हूँ, कभी मन कर्मेन्द्रियों के वश कोई ऐसे कर्म नहीं किया। तो सभी कान खोलके सुनो अभी हरेक की पर्सनालिटी में ऐसी रीयल्टी हो।

कहा जाता है नियत साफ मुराद हासिल। नियत साफ है अर्थात् स्वार्थ वा स्वभाव वश नहीं हैं, तो ऐसे जो संकल्प करते हैं वो प्रैक्टिकली लाइफ के अन्दर कोई संकल्प आया तो वो साकार हो जाता है। सिर्फ संकल्प निमित्त आयेगा, वह साकार हो ही जायेगा। अगर इसी तरीके से किसी को राज्य पद पाना है तो अपनी स्थिति ऐसी बनाओ। साथ रहना हो तो बाबा को साथी बनाकर सेवा में साक्षी हो रहना। गैरंटी है, अंत मते मुझे कोई भी बात का संकल्प नहीं आयेगा, यह मेरी चीज़ है, यह मेरे भाई बहन हैं। मेरी है ना, तो मैं कौन हूँ? इस शरीर में आत्मा हूँ परन्तु बाबा कहता है तुम शरीर में आत्मा, तुमको कैसे रहना है जैसे मैंने तुमको चलाया है। एक बारी मैंने अव्यक्त बाबा को कहा बाबा अच्छा चला रहे हो, तो बाबा ने कहा चल रही हो तो मैं चला रहा हूँ। तो अटेन्शन भूल मत जाना।

बाबा भी मुफ्त में मदद नहीं करता है, हमको मरना, झुकना, सीखना है। यह हमारे क्वीन मदर के शब्द सदा काम में आये हैं, मुझे मरना है। ऐसे नहीं सदा मैं ही मरूँ, हाँ मैं ही मरेंगी। तो जो बाबा ने सिखाया है वही करना है, इसमें धीरज रखने से कोई भी संकल्प नहीं आता है। सब शक्तियाँ बाबा से लेनी हो तो धीरज धर मनुआ... जल्दी उतावली में आ करके ऐसे नहीं करो। तो सभी सदा खुश रहो, आबाद रहो, न बिसरो न याद रहो। यह जो भी बातें सुनाई हैं वो बातें न बिसरो और जो न काम की बातें हैं वो न याद करो। ओम् शान्ति।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तीसरा क्लास

"योगी बनना है तो हर एक के पार्ट को देखते साक्षी रहो और आपस में एक दो के प्रति फेथ और रिगार्ड रखो"

(दादी जानकी)

त्याग एक भाग्य है, पर वास्तव में जिसको त्याग वृत्ति वाला बनना है तो बाबा से जो प्राप्तियां हुई हैं उन्हे इमर्ज करो तो कहीं आँख नहीं डूबेगी। जो कभी भी न डिस्टर्ब होता है, न डिस्टर्ब करता है, ऐसा कोई हो तो हाथ उठाओ।

साकार मुरलियों में बाबा ने जो कहा है सो हो रहा है। साकार मुरली को गहराई से पढ़ना चाहिए, इसे अच्छी तरह से समझो। जिसने साकार मुरली को समझा उससे पता चलता है कि निश्चय क्या होता है, परमात्मा क्या होता है, हम आत्मा क्या है? साकार को देखते हैं तो तीनों ही इकट्ठे हैं, मैंने तो साकार को देखा था ना, तब भी ऐसा था अब भी ऐसा है। साकारी भासना भी है और साकार, अव्यक्त कैसे बना वो भी भासना है, निराकार को कैसे साथी बनायें, यह भी अनुभव है।

आप सब बाबा की रचना को देख आप सबके लिए बहुत प्यार पैदा होता है, जैसे मैंने बाबा से प्यार लिया है, ऐसे तुम भी लो और सबके साथ मिलनसार होके रहो, यह है निरंतर योग। प्यार इसलिए है बाबा के बच्चे हैं, हम गोप-गोपियाँ हैं इसलिए मुरली से प्रेम है, प्रीत बुद्धि निश्चय बुद्धि विजयंती। कभी भी कोई संकल्प निराशा का नहीं आयेगा। कुछ भी हो जाए हिम्मत नहीं छोड़ेंगे। कोई मुझे कितना भी बुरा समझे मैं जैसा हूँ, वैसा बाबा का हूँ। भले कानों में कितनी भी बातें आई हो, कान मेरे इसलिए नहीं हैं। जो कुछ मेरे से भूल होती है मैं बाबा को सुनाती हूँ, तो बाबा मेरी माफ करता है। परन्तु और कोई बहन भाई है सूक्ष्म भले कुछ भी करे, माफ करना आना चाहिए। मैंने कोई भूल की तो मैं भगवान से माफी मांगती हूँ। अपने से भी कहती हूँ मेरे से भूल हुई है तो लगता है न मैं अपने को माफ कर सकती हूँ, न बाबा मुझे माफ करता है। समझो, मेरे से किसी को तकलीफ हुई बाबा माफ नहीं करेगा। जिसका जिसके साथ कुछ ऐसा व्यवहार होता है, तो वो उससे ही माफी मांग लेवे, तो वह थोड़ा हल्का हो सकता है। लेकिन अभिमान के कारण कहेंगे इसने किया तब मैंने कहा, ऐसे थोड़ेही उसको कहा... ऐसे अभिमान वाले फिर निरंतर याद में नहीं रह सकेंगे। आत्मा देह-अभिमान के वश गफलत करने की आदती हो गई है, भले बहुत देह-अभिमान गया है पर थोड़ा-सा इतना भी अन्दर रहा है जिसकी कभी फीलिंग आ जाती है तो बाबा याद नहीं रहता है।

आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं, मन को मैंने पुरुषार्थ में लगा दिया, बुद्धि में ज्ञान की धारणा किया तो योग लगा। तो याद में रहने का नेचुरल संस्कार बन गया। जो मन न चलायमान होता है, न डोलायमान होता है, अगर चलायमान हुआ तो बुद्धि में ज्ञान कम है। बुद्धि में आत्मा का, परमात्मा का, ड्रामा का अच्छा ज्ञान है तो आत्मा, परमात्मा, ड्रामा में एक्यूरेट है। जब से मैं बाबा के पास आई हूँ, योग पर बहुत अटेन्शन रखा है। कभी भी कोई काम के लिए बाबा ने मुझे बुलाया नहीं होगा, अपने आप हाज़िर हो गयी होंगी। सामने आते ही जनक यह करना है, जी बाबा मतलब बहुत फायदा लिया है जो काम भाई नहीं कर सकते थे वो भी बाबा ने करवाया। अभी इस एज में भी मेरी मेमोरी ठीक हो तो यह बाबा की कमाल है ना। जो भुलाने वाली बात है वह याद नहीं करेंगी, जो याद करने वाली बात है वो भूलेगी नहीं। ऐसी बातें न बिसरो और जो न याद करने की बातें है वो याद नहीं करो, यह है निरंतर याद।

अपने को साधारण नहीं समझो, एक दो को अच्छी तरह से देखो क्योंकि हम सब अच्छी आत्मायें हैं, भगवान के बच्चे हैं। भले हमारे मन्दिर बनेंगे, पर मन्दिर में रहने के लिए नहीं मिलेगा, यहाँ मनुष्य से देवता बनने के लिए बैठे हो। पहले केवल 4-5 भाई थे, अभी देखो इतने सारे भाई आके बैठ गये हो। जो भी है हर एक का पार्ट अपना है, परन्तु एक दो के लिए फेथ और रिगार्ड हो। जो भी बात हुई है या होती है, सेकेण्ड में बाबा भी कहता है उसे फुलस्टॉप लगा दो लेकिन मैं कहती हूँ यह भी वीकनेस है। ड्रामा अनुसार सीन चेंज हो रही है तो फुलस्टॉप क्यों दूँ! यह गहरी बात है। ड्रामा की नॉलेज में बहुत गहराई से जाने से नॉलेज देने वाला याद रहेगा। जितना भी ड्रामा की नॉलेज है उसे यूज़ करें, यह भी ड्रामा में नूँधा हुआ था। कोई प्लान नहीं था पर ड्रामा अनुसार... उसको स्वीकार करो क्योंकि यह टाइम जा रहा है इसलिए शोभता नहीं है। ड्रामा में समय का ज्ञान है तो इसमें समय को सफल करना है।

बाबा है मेरा साथी, बन जाना है साक्षी। साक्षी है तो योगी है, ऐसा गुह्य गोपनीय ज्ञान है यह। बाबा का मुस्कराना देखो साधारण नहीं है, देवतायें भी मुस्कराते हैं पर उससे शक्ति नहीं मिलती है, अच्छे हैं पर बाबा के मुस्कराने से ऐसा लगता है जैसेकि अन्दर का हमारा सारा दु:ख पी लेता है। शान्त रहने की, शान्ति की शक्ति देता है, ऐसी मेरी भी स्थिति हो।

अभी मेरे से कोई पूछे परमात्मा कैसा है तो मैं बहुत अच्छी तरह से बता सकती हूँ, जो ब्रह्मा द्वारा परमात्मा अपने आप सब कुछ करके, कराके खुद छिपा हुआ रहा है, उसको मैंने ढूँढा है। जब भी मैं 15-20 हजार की सभा को देखती हूँ, क्लास कराती हूँ, मुरली सुनाती हूँ... तो यह क्या है, किसने किया? इसलिए इसमें ताकत बहुत है प्रैक्टिकली आपके जीवन का सहारा, आन्तरिक शक्ति... जो बाबा कहता है सिर्फ इतनी स्मृति हो, सर्वशक्तिवान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेरा बाप है तो ताकत आती है। हिस्ट्री हॉल में जितने जो भी फोटोज़ लगे हुए हैं, उसे ध्यान से देखो तो वो सब अनुभव होगा। बाबा साकार में कभी अपना फोटो कहीं रखने नहीं देता था, पर अव्यक्त बाबा ने कहा रखना है क्योंकि अव्यक्त बापदादा ने कहा मैं गया नहीं हूँ, मैं बच्चों के साथ हूँ जब भी चाहो मेरे से मिलना, तो कमरे में जब भी जाओ तो बाबा से मिलो। अच्छा।

मधुबन में आना माना शक्ति भरना (दादी गुल्जार)

मधुबन में आना माना शक्ति भरना, जो ऐसा समझते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा, शक्ति भरी है! अभी यह शक्ति कायम रखना, छोड़ना नहीं, मधुबन की सौगात लेके जा रहे हो ना, इसको यूज़ करना। कुछ भी होवे तो कहो नहीं, मधुबन में मैंने यह संकल्प किया था, वह प्रैक्टिकल करना ही है। यहाँ से कई दृढ़ निश्चय करके जाते हैं तो कोई भी मुश्किल चीज़ उनके लिए बहुत सहज हो जाती है। आप भी दिल से छोड़ेंगे तो आपको भी उसकी मदद मिलेगी। बाबा से प्यार तो सबका है। तो प्यार वाला कुछ कहे यह छोड़ो, मुश्किल होता है क्या? प्यार में अपनी जान भी कुर्बान कर देते हैं, यह तो खराबी कुर्बान करनी है और तो कुछ करना ही नहीं है। तो बाबा को दे करके खाली होके जायेंगे और बाबा की बातें भरके जायेंगे। ठीक है ना! बाबा कितना खुश होगा एक एक को देखके, परिवर्तन किया है, छोड़ा है, हिम्मत रखी है, तो ऐसे हिम्मत वाले बच्चों को देख करके बाबा कितना खुश होगा! तो कल जब बाबा आये तो खुश होके जाये कि हर एक बच्चे ने कुछ न कुछ अपनी कमजोरी छोड़ी है। ऐसे नहीं साथ ही ले जाओ, साथ नहीं लेके जाना, यहाँ छोड़के जाना। छोड़ना आता है? या कहेंगे कि छूटता ही नहीं है? अरे, मैं ब्राह्मण हूँ, परमात्मा का बच्चा हूँ, परमात्मा का बच्चा क्या नहीं कर सकता! जो करने चाहे वो कर सकता है। बाबा मेरे साथ है, दिल में बाबा को रखो, दिल से निकालो नहीं। कुछ भी हो बाबा, बस, बाबा को दे दिया खत्म। अगर सच्ची दिल से देंगे तो बाबा जरुर लेगा, हमारा यह अनुभव है। तो सभी बाबा के बच्चे क्या बनके जायेंगे? रूहे गुलाब। यह स्टैम्प लगा! मेरा बाबा मेरे दिल में बैठा है तो कुछ भी मुश्किल नहीं होगा। बाबा को कहना, बाबा मेरे से थोड़ा नहीं होता है, आप थोड़ा मदद करो तो बाबा मदद के लिए बांधा हुआ है। बाबा है ही किसके लिए? हम बच्चों के लिए तो है। तो हम बच्चे हैं, तो बाबा क्यों नहीं मदद करेगा! सच्ची दिल से कहना। ऐसे नहीं बाबा मदद करो ना, करो ना, तो क्यों करें? लायक होंगे तो करेगा ना! तो संकल्प दृढ़ करो बस करना ही है, बुराई को छोड़ना ही है। छोड़ा तो छोड़ा फिर ले नहीं जाना। तो बाबा को क्या रिजल्ट सुनाऊं... कि बाबा यह तो सभी रूहे गुलाब हो गये हैं, ऐसे सुनाऊं! बाबा को कहूँ कि यह सब रूहे गुलाब हैं। तो बाबा कहेगा वाह बच्चे वाह! बाबा की तरफ देख रहे हो ना - बाबा कितना खुश हो रहा है। तो सदा खुश रहना और खुशी बाँटना। बिचारे दु:खी कितने हैं! समाचार सुनो, कोई देश में क्या हो रहा है, कोई देश में क्या... हम देखो कितने लकी हैं, बाबा के घर में आ गये हैं। तो खुशी नहीं गँवाना।

कहावत है खुशी जैसी खुराक नहीं। तो रोज़ खुश रहना, खुशी की खुराक खाना तो सब खत्म हो जायेगा। अच्छा। देख रही हूँ, सभी के अन्दर यही है – बाबा मिलेगा, बाबा मिलेगा, बाबा मिलेगा...। और बाबा को भी बहुत प्यार है एक एक बच्चे से। बाबा भी कहता है मेरे बच्चे, मेरे बच्चे। बाबा बच्चों को देखकरके इतना खुश होता है, जो मैं तो ऐसा कर नहीं सकती हूँ, लेकिन बाबा का चेहरा एक एक बच्चे को याद करते वाह मेरा बच्चा वाह! वाह मेरा बच्चा वाह! ऐसे बाबा याद करता है और हम खुश होते हैं वाह मेरा बाबा! वाह मेरा बाबा! तो कुछ भी हो जाये बस, वाह मेरा बाबा! वाह बाबा! वाह बाबा! करना, तो वो बात खत्म हो जायेगी क्योंकि यहाँ से बदलके तो जाना है ना! जो भी कुछ हो वो यहाँ छोड़के जाना। छोड़ने में तो होशियार हो, लेने में भी होशियार हो तो मालामाल होके जायेंगे। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

एक मत, एकरस और एकॉनामी का मंत्र सदा याद रखो

1) बाबा हम आत्माओं को देख हर्षित होता क्योंकि हमने अपने बाबा को जाना है, पहचाना है। हम आत्माओं ने उनसे सब सम्बन्ध जोड़े और हम आत्माओं ने ही कहा है हे बाबा तू ही मेरे सारे सम्बन्ध के दाता हो। हमारे सारे सम्बन्ध एक से हैं। यह शब्द जितना कामन है, उतना अनकामन है। देह के सारे सम्बन्ध एक से हैं, ऐसा कभी नहीं कहेंगे। पति को पति कहेंगे, माँ बाप को माँ बाप कहेंगे। उनसे मेरे सारे सम्बन्ध हैं, ऐसा नहीं कह सकते। माँ बाप को पति वा बेटे के सम्बन्ध से कोई नहीं देखेगा। लेकिन हम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

योगियों के सभी सम्बन्ध एक से हैं। एक से ही हमारा नाता है, एक से ही हमारा रिश्ता है। एक के हम हैं। एक ने ही हमें अपना बनाया, वन्डर यह है कि वह एक हरेक का एक है। हरेक के सारे सम्बन्ध उनसे हैं। देहधारी से कोई सभी अपना सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते। यह एक ही सब बच्चों का सर्व सम्बन्धी है इसलिए हम सभी वन हैं, वननेस है, टू थ्री नहीं। तो पहला सवाल - जब अमृतवेले हम उठते तो अपने से पूछें कि एक से ही मेरे सब सम्बन्ध हैं? एक ही मेरा बाबा है। वही एक मेरा टीचर है, वही मेरा सतगुरू है। दूसरा कोई है ही नहीं, यह सारा परिवार भी एक का ही है, मैं भी एक हूँ, यह सब एक के हैं, एक को ही सभी ने अपना बनाया है। एक ही सर्व को पूरा-पूरा अधिकार देता। यह भी वन्डर है। वह कभी ऐसे नहीं कहता तुम मेरे बड़े बच्चे हो, तुम्हें ज्यादा अधिकार दूँगा, तुम छोटे बच्चे हो तुम्हें कम दूँगा। नहीं। सबको एक ही पढ़ाई पढ़ाता, एक ही अधिकार देता। सभी को राजयोगी जीवन के एक जैसे नियम बताये, एक जैसी मर्यादायें बताई, संयम नियम दिये इसलिए हम सब एक ढांचे के पले हुए बच्चे हैं।

2) बाबा ने हम सबको एक मंत्र दिया है - एकमत, एकरस और एकानामी। यह मंत्र सबको याद होगा। अब हरेक पूछे - पहली-पहली हमारी एकमत है कि हम एक के हैं! दो के चार के नहीं। हम सब एक के हैं। तो सबके दिलों में एक श्रीमत रहती है! एक श्रीमत है हमारी मुरली। एक मुरली ही है हमारी पढ़ाई अथवा धारणा, तो हम सभी एक श्रीमत के अनुकूल पढ़ाई और धारणा रखते हैं? हम सब एकमत में रहते हैं? जहाँ एक मत है वहाँ द्वेत नहीं, द्वेष नहीं। राग नहीं, जब एक मत है तो न हमारी अनेकता है, ना कोई भेद है। जहाँ भेद है, वहाँ झगड़े हैं। जब हम एक के हैं तो न कोई भेद है, न कोई ईर्ष्या है, न कोई से नफरत है, न कोई से मन में ग्लानी है, न वैर विरोध है, मेरे मन में कोई भी दो मत नहीं। जहाँ एकता है, वहाँ ईश्वर है। हमारे बीच एक बाबा है, इसलिए दो मत नहीं। जब मैं आपस में दो मतें सुनती तो मुझे रामायण याद आ जाती। रामायण अर्थात् द्वेत आ गया। मंथरा पहुंच गई, कैकई का माथा घुमा दिया। राम को वनवास भेज दिया, दशरथ की मृत्यु हो गई.... जब द्वेत पैदा हुआ तो इसके कारण इतनी बड़ी कहानी बनी।

3) हमारा परम मित्र एक बाबा है, इसलिए कभी भी एक के सिवाय किसी को अपना मित्र नहीं बनाओ, खुदा को सच्चा दोस्त बनाओ। उससे हमारी दोस्ती है इसलिए हम खुदाई खिदमतगार हैं। जब देहधारी को मित्र बनाते तो आज वह मित्र है, कल दुश्मन भी बनेगा। देहधारी जो है ही व्यक्त, विनाशी तो आज मित्र बनेगा कल दुश्मन भी बन सकता है, इसलिए अपना अविनाशी मित्र एक बाबा को बनाओ।

4) एकरस स्थिति न होने का कारण एक की याद में हम समाये हुए नहीं हैं। एक की याद में रहो तो एक ही हमारा प्यारा है। सब रस एकरस में समाये हैं। सर्व सम्बन्धों का रस उनसे लो, सर्व शक्तियों का रस भरने वाला एक बाबा है इसलिए सदा एक बाबा दूसरा न कोई - याद करो, उसमें रहो तो कोई मोह ममता रहती ही नहीं। कर्मेन्द्रियां भी शान्त हो जाती। किसी भी प्रकार का रस अपनी ओर आकर्षित नहीं करता। कईयों को कनरस चाहिए, किसी को मुख का रस, किसी को जीभ का रस चाहिए, किसी की बुद्धि दूसरों की सूरत में जाती, उसके नयन दूसरों की सूरत देखते, सीरत नहीं। हमारे को बाबा ने कहा है इन कानों से मधुर बोल सुनो, दूसरी बातें नहीं सुनो, दूसरे रसों में नहीं जाओ। कहते थोड़ा-थोड़ा मेरा परचिन्तन चलता, क्यों चलता? क्योंकि कनरस सुनने की आदत है। कोई कहते मेरी थोड़ी-थोड़ी बोली कडुई निकलती, मेरी दृष्टि बुरी जाती। अरे, मैं कौन हूँ! मुझे पढ़ाने वाला कौन है? जब दृष्टि जाती तो हमारा वह नशा किधर चला जाता? हम कहते तो बड़ी दिल से हैं कि हमें भगवान पढ़ाता है, हम डायरेक्ट उनकी सन्तान हैं। क्या इस बोल में आप किसी को संशय है? जब हमारी खुमारी एक है फिर दूसरी बातें क्यों बोलते। अपनी खुमारी में रहो, अगर आपकी कोई शिकायत किसी से करे तो आप कहेंगे यह मेरी शिकायत क्यों करता, बुरा लगेगा ना। फिर स्वयं ही स्वयं की शिकायत बाबा से क्यों करते! बाबा, मेरी आंखे मुझे धोखा देती हैं। बाबा ने तो हमें बचा लिया। अब तो हम बाबा की गोदी में छिपे हुए लाल हैं। मुझ लाल को दुनिया की कोई आंच आ नहीं सकती। इस नशे में रहो तो इस जैसी कोई खुमारी नहीं। यह भट्ठी है सर्व को उस खुमारी में चूर होकर जाने के लिए। हम दुनिया को चैलेन्ज करने वाले हैं, हम नई दुनिया, नया राज्य स्थापन कर रहे हैं। हमने पुराना सब छोड़ दिया। हम आधाकल्प जिसके चक्र में थे, हमें बाबा ने उससे निकाल दिया इसलिए हम हैं बेहद के वैरागी, बेहद के त्यागी।

5) बाबा कहता मैं तुम बच्चों का ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। हम भी कहते बाबा हम भी आपका ओबीडियन्ट स्टूडेन्ट हूँ। ओबिडियन्ट माना कदम-कदम आपकी श्रीमत पालन करूंगा। फिर हम कैसे कहते बाबा हम आपकी यह आज्ञा पालन नहीं कर सकता। बाबा की डेली आज्ञा है, बच्चे तुम्हें अपार खुशी रहनी चाहिए। खुशी हमारा खजाना है।

6) हम बाबा के राजा बेटे हैं अगर कोई से मैं इज्जत मांगती तो क्या ये भीख नहीं मांगी। अगर मैं कहूँ फलाना मेरी इज्जत करे – तो क्या मैं भिखारी हूँ? तुम एक के प्यारे रहो, तो दुनिया प्यार करेगी। मेरी इज्जत एक ने की तो दुनिया मेरी इज्जत करेगी। तुम एक के प्यार में डूब जाओ। एक से सम्बन्ध रखो तो दुनिया की कोई हस्ती के प्यार की भूख नहीं। हम भिखारी नहीं। हम बाबा की हस्ती हैं, प्यार मांगा नहीं जाता, प्यार किया जाता है। तू सबको प्यार करो तो सब प्यार करेंगे। तुम शुद्ध भावना रखो तो सब रखेंगे। अच्छा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor